Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

एडमंड हुसरेल का दर्शन : फेनोमिनोलॉजी

डॉ नरेन्द्र कुमार*

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

ईमेल: narendrakrchahar@gmail.com

***सार** - एडमंड हुसरेल का दर्शन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने दर्शन में परम्परागत रूप से विद्यमान चिन्तन की विधाओं को समुचित नहीं माना। उन पर ब्रेंटनों व डेकार्ट का व्यापक प्रभाव था। वे ब्रेंटनों के इस विचार से प्रभावित थे कि चेतना बिना विषय के संभव नहीं है। वे डेकार्ट के इस विचार से भी प्रेरित थे कि हमारा ज्ञान तब तक संदिग्ध है जब तक उसका कोई असंदिग्ध आद्य भाव ज्ञात न हो। ऐसा आद्य भाव जानने के लिए उन्होंने फेनोमिनोलॉजी की विधि विकसित की। यह विधि दर्शन के साथ साथ सामाजिक विज्ञानों में भी उपयोग की जाने लगी।*

***मुख्य शब्द** —फेनोमिनोलॉजी, मनोवैज्ञानिकता, प्रकृतिवाद, शुद्ध संवृति, असंबंधन, अपचयन।*

----------X----------

परिचय

एडमंड हुसरेल का दर्शनशास्त्र के साथ —साथ सामाजिक विज्ञानों में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। बीसवीं सदी में उनके द्वारा प्रतिपादित फेनोमिनोलॉजी ने घटनाओं को समझने की एक नवीन दृष्टि प्रदान की। फेनोमिनोलॉजी को कालांतर में लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों ने न केवल स्वीकार किया वरन इस पद्धति का प्रयोग कर विषय में एक नवीन आयाम भी जोड़ा।

जर्मन दार्शनिक हुसरेल का जन्म 1859 में ऑस्ट्रियाई साम्राज्य के अन्तर्गत प्रोस्निट्ज (मोराविया) में हुआ था। उन्होंने अपनी डॉक्टरल डिग्री गणित विषय में वियना विश्वविद्यालय से 1882 में प्राप्त की। मार्टिन हाइडेगर जैसा विचारक व दार्शनिक उनका शिष्य था जो हुसरल के विश्वविद्यालय से सेवानिवृत होने पर उनके स्थान पर आसीन हुए।

हुसरेल के विचारों पर ब्रेंटानो, डेकार्ट का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। हुसरेल ब्रेंटनो के विषयापेक्षी सिद्धान्त (Theory of Intentionality) से काफी प्रभावित थे। इस सिद्धान्त के अनुसार चेतना को किसी न किसी विषय की अपेक्षा रहती है अर्थात् चेतना बिना विषय के हो ही नहीं सकती। अगर कहीं चेतना है तो उसका कोई न कोई विषय भी होगा। विषय के अभाव में चेतना भी नहीं होगी। हुसरल ने डेकार्ट के प्रति भी ऋण को स्वीकार किया है। फेनोमिनोलॉजी की विधि को विकसित करते हुए डेकार्ट की विधि का अनुसरण करते हैं। जिस प्रकार डेकार्ट असंदिग्ध सत्य की खोज में हर तथ्य पर सन्देह करते हैं उसी प्रकार हुसरेल भी चेतना के वास्तविक अधिष्ठान की खोज में हर तथ्य व विचार को सन्देह की नजर से देखते हैं। लेकिन वे डेकार्ट की विधि को अपनी आवश्यकता के अनुसार परिमार्जित भी करते हैं। हुसरेल संदेह करते करते दर्शन के क्षेत्र में पहले से प्रचलित चिन्तन के तरीकों को भी उचित नहीं मानते हैं। उनका मानना था कि दार्शनिक चिन्तन के परम्परागत ढंग किसी न किसी अधिष्ठान को सत्य मानकर उस पर वैचारिक संरचना को निर्मित करते हैं। हुसरेल के अनुसार चिंतन का अधिष्ठान जब तक स्वतः सिद्ध व स्वतः प्रदत्त नहीं होता है तब तक उसे चिन्तन का वास्तविक आधार नहीं माना जा सकता। हुसरल ऐसे स्वतः सिद्ध आधार को ढूंढने के लिए जिस विधि को विकसित करते हैं उसे उन्होंने फेनोमिनोलॉजी नाम दिया है। इस प्रकार फेनोमिनोलॉजी एक पद्धति है जो चिन्तन के वास्तविक स्वतः सिद्ध अधिष्ठान को ज्ञात करने में मदद करती है।

हुसरेल द्वारा प्रतिपादित फेनोमिनोलॉजी प्रतीति (apprerenceo का बौद्धिक परीक्षण करती है। हम जो कुछ

www.ignited.in

भी अनुभव करते हैं उसमें ऐसा कोई तत्व होता है जो अनुभव का मूल होता है। इस तत्व को अनुभव का आद्य रूप (Primया प्रतीति कहा जा सकता है। इस आद्य रूप में केवल प्रदत्तता (given ness) मात्र है। इस प्रकार फेनोमिनोलॉजी इस प्रतीति का बौद्धिक अन्वेषण करता है। हुसरल का मत है कि उक्त प्रतीति हमें चेतना में होती है अतः इस आद्य रूप का अन्वेषण करने के लिए हमें चेतना को अध्ययन का केंद्र बनाना पड़ेगा। इस प्रकार फेनोमिनोलॉजी की विषय वस्तु चेतना है।

हुसरेल की यह विधि पूर्णतः एक सैद्धांतिक प्रक्रिया है जो एक सैद्धांतिक खोज के लिए विकसित की गई। हुसरेल का मत है कि हमारी चेतना में जो कुछ भी प्राप्त होता है वह विशुद्ध रूप में नहीं होता है वरन् हमारे अनेक मानसिक व प्रकृतिवादी विश्वास (Psychologism and Naturalistic belief) वास्तविक स्वरुप को विरूपित कर देते हैं। जिसके कारण हम चेतना में प्रदत्त उस आधारभूत अधिष्ठान को नहीं जान पाते हैं जो हमारे अनुभव का वास्तिक आधार बनता है। इसीलिए हुसरेल अपनी फेनोमिनोलॉजी में प्रकृतिवादी विश्वासों व मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों से बचने का प्रयास करते हैं तथा इन दोनों का खण्डन करते हैं। वास्तव में प्रकृतिवादी विश्वासों व मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों का निराकरण इस विधि का महत्वपूर्ण पक्ष है। हुसरेल का मानना है कि मनोविज्ञान का प्रभाव व्यापक है। दर्शन को भी अनेक विचारक मनोविज्ञान की दृष्टि से समझने का प्रयास करने लगे हैं। यहां तक कि गणित के नियमों को मनोविज्ञान के नियमों के आधार पर विश्लेषित किया जाने लगा है। हुसरेल इसे मनोवैज्ञानिकता) कहते हैं तथा इसकी आलोचना करते हैं। हुसरेल के अनुसार यदि इस प्रकार की मनोवैज्ञानिकता को महत्व दिया गया तो पूर्णतः वस्तुनिष्ठ व तटस्थ व्याख्या की सम्भावना समाप्त हो जायेगी। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि पूर्णतः वस्तुनिष्ठ भावों का होना सम्भव ही नहीं है। हुसरेल मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं को इसलिए भी अस्वीकार करते हैं क्योंकि ऐसी व्याख्याएं अभिरुचि, विश्वास व भावनाओं पर आधारित होती है जिन्हें स्वतः सिद्ध या प्रमाणित नहीं माना जा सकता।

हुसरेल प्रकृतिवादी दृष्टि का भी खण्डन करते हैं। जब हम यह मानने लगते हैं कि जगत तथ्यात्मक है, भौतिक वस्तुएं अस्तित्वमान हैं तो प्रकृतिवादी दृष्टि विकसित होती है। प्रकृतिवादी इस दृष्टि के आधार पर ही विस्तृत दर्शन की रचना करते हैं। वे भौतिक जगत पर कोई सन्देह नहीं करते हैं तथा यह मानते हैं कि सब कुछ प्राकृतिक नियमों से बंधे हुए हैं।

हुसरेल मनोवैज्ञानिकता व प्रकृतिवादी विश्वासों की आलोचना करते हुए स्पष्ट करते हैं कि ये दोनों हमारे सोचने के ढंग इतने घुलमिल गए हैं कि हमारे सारे ज्ञान को विकृत कर देते हैं। अगर हमें ज्ञान के वास्तिक आधार को जानना है तो हमें प्रकृतिवादी विश्वास से मुक्त होना होगा ताकि ऐसा वस्तुनिष्ठ स्वतः सिद्ध भाव को ढूंढा जा सके जो ज्ञान का वास्तिक आधार बन सके। फेनोमिनोलॉजी ऐसे ही स्वतः सिद्ध वस्तुनिष्ठ सार भाव को जानने या पकड़ने की विधि है।

हुसरेल के अनुसार उनकी फेनोमिनोलॉजी एक आत्मनिष्ठ (subjective) विधि है क्योंकि इस विधि में चेतना का विश्लेषण किया जाता है तथा यह विधि स्वतः सिद्ध वस्तुनिष्ठ भाव को पकड़ती है। इस प्रकार हुसरेल आत्मनिष्ठ विधि से वस्तुनिष्ठ भाव को प्राप्त करना चाहते हैं।

हुसरेल की फेनोमिनोलॉजी चेतना को परिमार्जित व परिष्कृत करने की विधि है। इस विधि के दो चरण है। पहले चरण में हम बाह्य प्रकृतिवादी प्रभावों से चेतना को मुक्त करेंगे। अर्थात् हम यह प्रयास करते हैं कि चेतना इन प्रकृतिवादी विश्वासों से असंबंधित रहे। हुसरेल इसे असंबंधन के रूप में परिभाषित करते हैं। इसके पश्चात् चेतना के आंतरिक विकारों को दूर करते हैं जो मनोवैज्ञानिकता से पैदा होते हैं। इस प्रक्रिया को अपचयन कहते हैं। इस प्रकार फेनोमिनोलॉजी असंबन्धन व अपचयन के दो चरणों से बनी विधि है।

हुसरेल इन दोनों चरणों या प्रक्रियाओं की विस्तार से व्याख्या करते हैं।

असंबंधन (Epoche) अर्थ है पृथक रखना या अलग करना। हुसरेल के अनुसार हमें चेतना में प्रदत्त विषय को उसके प्रदत्त रूप में पकड़ना है। इस हेतु हमें प्रकृतिवादी पूर्वमान्यताओं का निराकरण करना होगा। असंबंधन इसी प्रक्रिया का नाम है।इस प्रकार स्पष्ट है असंबंधन अलग रखने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रकृतिवादी विश्वासों से अपनी चेतना को पृथक किया जाता है। हुसरेल का मत है कि असंबंधन का अर्थ यह नहीं है कि हम भौतिक वस्तुओं को नकार रहे हैं या निषेध कर रहे हैं बल्कि हम यह प्रदर्शित करना चाहते हैं कि हम उनके बारे

में कोई निर्णय लेने की स्थिति में नहीं हैं। अपनी इस असंबंधन की प्रक्रिया में हुसरेल ब्रैकेटिंग (Bracketing), डिटैचमेंट (Detachment) जैसी अवधारणाओं का प्रयोग करते हैं।

बाह्य प्रकृतिवादी पूर्वमान्यताओं से पृथक होने के बाद हुसरेल आंतरिक विकारों अर्थात् मनोवैज्ञानिक धारणाओं से पृथकीकरण पर जोर देते हैं। इस हेतु वे अपचयन की विधि को अपनाते हैं। हुसरेल अपचयन के तीन स्तरों की चर्चा करते हैं। ये तीनों स्तर क्रम में न होकर एक साथ क्रियाशील होते हैं।

1. **फेनोमिनोलॉजिकल अपचयन (Phenomenological Reduction):—** हुसरेल के अनुसार आंतरिक विकार मनोवैज्ञानिक साहचर्य के कारण उत्पन्न होते हैं अतः अपचयन के प्रथम स्तर में हमें इस साहचर्य को समाप्त करना होगा। जब यह साहचर्य समाप्त हो जाएगा तो आत्म की चेतना अस्तित्व मे आ जायेगी।

2. **तात्विक अपचयन (Transcendental Reduction) :—** इस स्तर में चेतना को आत्मनिष्ठ अंतरिकता से मुक्त किया जाता है। आत्मनिष्ठ अंतरिकता के बिना चेतना की विषयोन्मुखता स्पष्ट नहीं होती है।

3. **मूर्तकल्पी अपचयन (Eidetic Reduction) :—** इस स्तर में विषय चेतना के बंधन से मुक्त होकर अपने सामान्य स्वरूप में विद्यमान हो जाता है।

इन विभिन्न स्तरों से गुजरने के बाद हम ऐसी अवस्था में आ जाते हैं कि शुद्ध संवृति भाव को जान पाते हैं। यह शुद्ध संवृति भाव हमारे ज्ञान विज्ञान का आधार हो सकता है। उपरोक्त विवरण में हुसरेल का उद्देश्य आधारभूत ज्ञान की प्राप्ति के लिए सैद्धांतिक दृष्टि से एक विधि की खोज करना है। लेकिन इस प्रक्रिया में हुसरेल को मानना पड़ेगा कि यह सम्पूर्ण चिन्तन प्रक्रिया जड़ में नहीं चल रही। इसी से हुसरेल के लिए तात्विक आत्मनिष्ठता को स्वीकार करना जरूरी हो जाता है।

हुसरेल का फेनोमिनोलॉजी का विचार न केवल दर्शनशास्त्र अपितु सामाजिक विज्ञानों को भी चिंतन की नवीन विधि प्रदान करता है। हुसरेल इस विधि के माध्यम से उस सार्वभौमिक भाव को पकड़ना चाहते हैं जिससे हमारी चेतना संरचित होती है। ऐसे भाव स्वतः सिद्ध एवम् वस्तुनिष्ठ होते हैं। इन्हें हमारे ज्ञान का आधार बनाया जा सकता है। इस प्रकार हुसरेल अपनी फेनोमिनोलॉजी के द्वारा चेतना व प्रत्यक्ष की समुचित व्याख्या करने का प्रयास करते हैं।

संदर्भ

1. हुसरेल ए : लॉजिकल इन्वेस्टिगेशन, रूटलेज एंड केगल पॉल लिमिटेड, 1970

2. लाल, बी के: कंटेंपरेरी वेस्टर्न फिलोशोफी, मोतीलाल बनारसीदास, 2007

Corresponding Author

डॉ नरेन्द्र कुमार*

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

www.ignited.in